आओ, हम ज्ञान ढूंढ़े, वरन यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यत्न भी करें; क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चिन्त है; वह वर्षा की नाईं हमारे ऊपर आएगा, वरन बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती है।। (होशे ६:३)

बाइबल शिक्षा के सिद्धान्त

उद्देश्य:

हमारी यह प्रार्थनापूर्ण हार्दिक इच्छा है कि प्रत्येक प्रतिभागी प्रत्येक सप्ताह परमेश्वर के वचनों के साथ नियमित समय बिताये ताकि वह अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में व उसके साथ चलने के बारे में सीख सके।

अहमियत:

- ताकि हम जीवन के हर प्रश्न के लिए परमेश्वर के वचन को बुनियाद बना सकें।
- ताकि हम स्त्रियों और पुरूषों को परमेश्वर के प्रेम को समझने के लिए प्रोत्साहित कर सकें और प्रत्येक सप्ताह यीशु के प्रतिरूप को उनके बीच प्रदर्शित कर सकें।
- ताकि हम लोगों में परमेश्वर के वचनों को पढ़ने की चाह को उजागर कर सकें, क्योंकि परमेश्वर पिता हम सभी को अपने पास बुलाना चाहते हैं।
- ताकि परमेश्वर पर पूर्ण रूप से निर्भर होकर प्रत्येक कक्षा की साप्ताहिक सेवकाई के लिए प्रार्थना करी जा सके।
- ताकि विभिन्न विश्वास या मतों के लोगों को परमेश्वर के वचन से सच्चाई को खोजने के लिए एक साथ आमन्त्रित किया जा सके।
- ताकि एकता के उददेश्य को प्रेम और सेवा भावना के द्वारा प्रगट किया जा सके।
- ताकि उन्हे परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रशिक्षित व तैयार किया जा सके।

लक्ष्य:

- जिससे प्रतिभागी परमेश्वर के वचनों के साथ नियमित तौर पर व्यस्त रहे (प्रश्नों के उत्तर देने में)।
- जिससे वे अपने दैनिक जीवन को परमेश्वर के वचन से जोड़ कर देख सकें।
- जिससे वे नियमित रूप से दूसरों के लिए प्रार्थना करें।
- उत्तर पाने के लिए वे ज़्यादा से ज़्यादा परमेश्वर के वचनों के पास आ सकें।
- जिससे सारे सदस्यों को चर्चा में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।
- जिससे वे खुलकर और स्वेच्छा से बता सकें कि परमेश्वर ने उनके जीवन में क्या काम किये हैं और कर रहे हैं।

उत्पत्ति: आदि का अध्ययन

परिचय

किसी भी युग की तुलना में आज, लोग इतने जटिल प्रश्नों के उत्तर ढूँढ रहें है: जिनके जवाब वैज्ञानिकों के पास भी नहीं हैं। लोग जानना चाहते हैं कि हम कौन हैं, हम यहां कैसे आये, हमारे जीवन का उददेश्य क्या है, और कौन है जो इस सम्पूर्ण सौर्य मण्डल को चला रहा है। बाइबल के पन्नों में इन सभी प्रश्नों वरन अन्य प्रश्नों के उत्तर भी छुपे हुए हैं। यह एक अविश्वसनीय पुस्तक है जसे हमें खुद में नहीं वरन जगत के सृष्टिकर्ता परमेश्वर में दृढ़ आशा प्रदान करती है।

उत्पत्ति में कभी भी परमेश्वर के अस्तित्व को लेकर विवाद नहीं किया गया है क्योंकि उसके अस्तित्व और शक्ति को प्रारम्भ से स्वीकार किया गया है। पहले ही अध्याय में हम सृष्टि के चमत्कार के साक्षी बनते हैं। रोमियों १:२० के अनुसार यही चमत्कार हमें परमेश्वर के अस्तित्व का प्रमाण प्रदान करता है। " क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते है, यहां तक कि वे निरूत्तर हैं। " परमेश्वर की सारी सृष्टि में मनुष्य ही था जिसे परमेश्वर ने अपने स्वरूप में बनाया और उसी ने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया। अध्याय ३ हमें मनुष्य की परीक्षा और उसके पतन के बारे में बताता है। अध्याय ६ में हम मनुष्य की दुष्टता और महाजलप्रलय के समय में परमेश्वर के करूणामय न्याय को देखते हैं। अध्याय ११ में एक बार फिर हम बाबेल की मिनार पर मनुष्य का विद्रोह और परमेश्वर के करूणामय न्याय को पढ़ते हैं। हम अध्याय १२ को एक प्रतीज्ञा के साथ समाप्त करते हैं। इस जगह पर आकर हमें मनुष्यों के प्रति परमेश्वर के छुटकारे की योजना का पता चलता है और हमारा परिचय उस व्यक्ति अर्थात अब्राहम अर्थात विश्वास के पिता से होता है जिसे परमेश्वर ने अनुग्रह के पात्र के रूप में चुना था। (गलातियों ३:२९)

लेखक

पुराने और नये नियम के लेखे के अनुसार बाइबल की प्रथम पांच पुस्तकों को मूसा ने लिखा था (यहोशू ८:३१; एज्रा ७:६; दानिय्येल ९:१३; प्रेरितों ३:२२; रोमियों १०:५)। यीशु ने मूसा के लेखों का इस्तेमाल यूहन्ना ५:४५—४६ व मरकुस १:४४ में किया था। पांच पुस्तकों के इस संग्रह को पंचतन्त्र या पेन्टाटुक के नाम से जाना जाता है। यहूदियों के लिए आरम्भ में ये पांच पुस्तक मिलाकर एक ही पुस्तक मानी जाती थी,जिसे वे "तोरह", " व्यवस्था " और कभी—कभी "मूसा की व्यवस्था" भी कहा करते थे। यह ज्ञात नहीं है कि निश्चित रूप से कब यह पुस्तक एक से पांच भागों में विखण्डित हो गयी।

दिनाँक

मूसा का जन्म १५२५ ई०पू० हुआ था और वे करीब १२० वर्षों पश्चात उनका देहान्त हो गया था। उत्पत्ति की पुस्तक सृष्टि से आरम्भ होकर युसुफ के साथ खत्म हो जाती है, जिसके परिवार में होकर जगत के उद्धारकर्ता जन्म लेने वाला था।

विषय

उत्पत्ति की पुस्तक में, सम्पूर्ण सृष्टि एक मंच है, परमेश्वर की महिमा मूल विषय है और मानवता, पाप व छुटकारा कहानी क्रम है। इस पुस्तक में हम बहुत सी बातों के बारे में पहली बार पढ़ते हैं, जैसे पहला विवाह, पहला परिवार, पहली बार किसी मनुष्य द्वारा परमेश्वर को विरोध करना और उसका महा परिणात भुगतना। हम पहले दुष्कर्म करने वाले परिवार को देखते हैं, सिद्ध वातावरण के बावजूद असफल हो गया। हम पहली हत्या को देखते हैं और उस संस्कृति के गवाह बनते है जिसने सवप्रथम परमेश्वर के मार्गदर्शन के बिना आगे बढ़ना चाहा। इन्ही लोगों के बीच में से, इब्रानी राष्ट्र में, परमेश्वर सारे देशों के लिए छुटकारे का इन्तेजाम करते हैं। वह अपने प्रतीज्ञा किये गये लोगों के द्वारा अपने मुक्तिदाता को इस जगत में भेजते हैं। १पतरस २:९ हमें बताता है कि उसने उन लोगों को ,"एक चुना हुआ वंश, और राज–पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा होने के लिए चुन लिए, इसलिये कि जिस ने उन्हे अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, वे उसके गुण प्रगट करें। "

जबकि सम्पूर्ण धर्मशास्त्र का मूल विषय परमेश्वर की महिमा ही है, फिर भी प्रथम १२ अध्याय की कहानी हमें दो बातें दिखाती है। प्रथम, मानवजाति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। हम सभी ठीक पहले जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं, उसी प्रकार के पापों में संघर्ष करते हैं और ठीक उसी तरह के प्रश्न पूछते हैं जैसे बाइबल की इन कहानियों में लिखे हुए हैं। दूसरा मनुष्य के साथ परमेश्वर जुड़े होने की कहानी को पढ़कर प्रतीत होता है कि परमेश्वर सत्य और व्यक्तिगत है, और हमने जीवन के मूल्यों को उससे विरासत में पाया है और मनुष्य को अपने सृष्टिकर्ता की संगति की अत्यधिक ज़रूरत है। बिना परमेश्वर के मनुष्य कभी सिद्ध नहीं हो सकता। मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता के साथ धनिष्ठ समन्ध स्थापित किये हुए अपने जीवन के सही मायनों को नहीं जान या पूरा कर सकता।

उत्पत्ति: आदि का अध्ययन

अध्याय १

कुँजी वाक्य: सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने स्वयं को अपनी सृष्टि में व्यक्त किया है, उसे अपनी सृष्टि पर पूरा पूरा अधिकार है और वह अपनी सृष्टि के द्वारा स्तुति और प्रसंशा पाने के योग्य है।

उत्पत्ति १:१–५ पढ़ें दिन १

१. आदि में कौन विद्यमान था?
२. आदि में परमेश्वर ने किस चीज़ की सृष्टि की ?
३. हम उस परमेश्वर के बारे में क्या सीखते हैं जिसके शब्दों के द्वारा सारी वस्तुएं अपने अस्तित्व में आयीं?
४. यूहन्ना १:१ और १४ परमेश्वर के वचन के बारे में क्या कहता है?

दिन २

उत्पत्ति १:१–९ पढ़ें

१. उल्लेख करें कि पहले दिन में क्या हुआ?
२. यह जानना क्यों जरूरी है कि परमेश्वर ने समय की रचना की है?
३. दूसरे दिन में क्या हुआ?

दिन ३

उत्पत्ति १:१०–१९ पढ़ें

१. उल्लेख करें कि तीसरे दिन में क्या हुआ?
२. उल्लेख करें कि चौथे दिन में क्या हुआ?
३. परमेश्वर ने अपनी सृष्टि का उल्लेख किस प्रकार से किया?

दिन ४

उत्पत्ति १:२०–२५ पढ़ें

१. परमेश्वर ने पाँचवे दिन क्या किया?
२. परमेश्वर ने अपने द्वारा रची गयी सृष्टि को आशीशित किया और उन्हे एक आज्ञा दी। वह आज्ञा क्या थी?
३. परमेश्वर ने २४–२५ पद में किस चीज़ की सृष्टि की?
४. परमेश्वर ने अपनी सृष्टि का उल्लेख किस प्रकार किया?

दिन ५

उत्पत्ति १:२६–३१ पढ़ें

१. छठे दिन परमेश्वर ने क्या बनाया?
२. २६ वचन के अनुसार परमेश्वर ने मनुष्य को "हमारे स्वरूप में " बनाया । इसका क्या मतलब है?
३. क्या परमेश्वर ने मनुष्य को बनाने के लिए अपने शब्दों का इस्तेमाल किया? किस प्रकार से उसने मनुष्य को बनाया?
४. परमेश्वर ने मनुष्य को किस तरह जीवन दिया?
५. २८ पद में परमेश्वर ने मनुष्य को आशीषित किया और उसे निर्देश दिये। वे निर्देश क्या थे?
६. पद ३१ में परमेश्वर अपनी बनाई गयी सृष्टि के बारे में क्या कहते हैं?

दिन ६

अध्याय:१ आदि में.....परमेश्वर

मूल पाठ: अध्याय १
कुँजी वचन : आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
मुख्य वाक्य: सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने स्वयं को अपनी सृष्टि में व्यक्त किया है, उसे अपनी सृष्टि पर पूरा पूरा अधिकार है और वह अपनी सृष्टि के द्वारा स्तुति और प्रसंशा पाने के योग्य है।
जीवन सिद्धान्त: परमेश्वर के प्रति मेरा विश्वास मेरे और दूसरों के बारे में मेरे विचारों को प्रभावित करता है।

साराशं: उत्पत्ति का पहला अध्याय परमेश्वर की श्रेष्ठता का निर्माण करते हुए आगे बढ़ता है। उत्पत्ति की शुरूआत इस वाक्य के साथ होती है " आदि में परमेश्वर ने....." आदि में परमेश्वर सृष्टि के निर्माण से

पहले विद्यमान था, वह स्वंय अस्तित्व में आया और उसे अस्तित्व में आने के लिए किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं थी। यह सत्य सृष्टि के कार्य का आधार है। परमेश्वर सम्पूर्ण सृष्टि का स्रोत है। यिर्मयाह ५१:१५ में लिखा है, "उसी ने पृथ्वी को अपने सामर्थ से बनाया, और जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया। " सारी पुर्णता अपने सृष्टिकर्ता में वास करती है (यूहन्ना १५:५, इफिसियों २:१० व प्रकाशित ४:११)। वह हमारे अस्तित्व और कामों का आदि और अन्त दोनों है। परमेश्वर के बिना हमारा जीवन कभी सम्पूर्ण नहीं हो सकता है। बिना परमेश्वर के हम अपने चारों ओर बसे संसार को नहीं समझ सकते हैं। हम स्वयं को, अपने चारों ओर बसी वस्तुओं को और खुद परमेश्वर को नहीं समझ सकते। परमेश्वर के बिना हम असहाय हैं। फिर भी यदि हम परमेश्वर द्वारा प्रारम्भ में ठहराये गये योजना, व्यक्तित्व, मित्रता, परिवार व समय को स्वेच्छा से स्वीकार नहीं करते हैं तो हमारा जीवन हमेशा कि लिए उददेश्यहीन, फलहीन व बेकार हो जाता है।

आदि में परमेश्वर ने रचना की। परमेश्वर की रचना के साथ ही समय का आरम्भ हो गया। उत्पत्ति १:१ में जगत, उत्पत्ति १:२१ में जीनव , उत्पत्ति १:२७ में मानवता की रचना करने के लिए सृष्टि(बारा) इस्तेमाल किया गया है। परमेश्वर ने शून्य से लेकर सारे जगत हो रच डाला। हम उत्पत्ति १ में १० बार ऐसा पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने कहा... और वैसा ही हो गया। परमेश्वर के वचन अर्थात शब्दों और सृष्टि की रचना के बीच सम्बन्ध अति महत्वपूर्ण है। भजन संहिता ३३:६ बताता है कि " आकाशमण्डल यहोवा के वचन से और उनके सारे गण उसके मुँह की श्वास से बने। " परमेश्वर ने जगत की सारी वस्तुओं को अपने वचन के द्वारा बनाया और जिस वचन के द्वारा उसने जगत की सारी चीजों को बनाया वह प्रभु यीशु को छोड़ और कोई नहीं है। यूहन्ना १:१ को देखें "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और *वचन परमेश्वर* था। " यूहन्ना १:१४ में लिखा है " और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया। यह जानना बहुत अद्भुत है कि जिस वचन के द्वारा परमेश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की वह वचन विश्वास द्वारा पढ़े जाने पर आज भी हमारे जीवनों में (इब्रा. ४:१२) कार्य करता है।

परमेश्वर के प्रति मेरा विश्वास मेरे और दूसरों के बारे में मेरे विचारों को प्रभावित करता है।

उत्पत्ति: आदि का अध्ययन

शिक्षा २: अध्याय २—३

मुख्य वाक्य: आदम और हव्वा का परीक्षा में पड़ना और पाप का परिणाम भुगतना, परन्तु परमेश्वर उनसे छुटकारे के बीज की प्रतीज्ञा करते हैं।

पहला दिन

उत्पत्ति २:४—१७ पढ़ें

१. परमेश्वर ने पहले आदमी के लिए किस प्रकार के घर का इन्तेज़ाम किया था ?
२. परमेश्वर ने मनुष्य को क्या काम दिया था? आपके विचार से काम क्यों महत्वपूर्ण है?(सभोपदेशक ५:१९)
३. सुन्दर वातावरण और उत्तम व्यवस्था के बीच परमेश्वर ने मनुष्य को क्या करने की आज्ञा नहीं दी थी? (पद १६ व १७)

दूसरा दिन

उत्पत्ति २:१८—२५ पढ़ें

१. परमेश्वर ने ऐसी कौन सी जरूरत को देखा जिसकी पूर्ती बगीचे से नहीं हो सकती थी?
२. परमेश्वर ने स्त्री को किस तरह बनाया?
३. क्या आप उस अहमियत को देख पाते हैं जो परमेश्वर ने स्त्री और विवाह को दी थी?

तीसरा दिन

उत्पत्ति ३:१—७ पढ़ें

१. सर्प के द्वारा किसने बात की?
२. मत्ती १३:१९, यूहन्ना ८:४४ और १ पतरस ५:८ की सहायता के द्वारा क्या आप शैनात का वर्णन कर सकते हैं?

३. हव्वा ने ऐसा क्या किया जिसके द्वारा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना आसान हो गया?(याकूब ४:७)

४. स्त्री के भीतर कौन सी अभिलाषाओं को उकसाया गया था जिनका उल्लेख १यूहन्ना २:१५–१७ में किया गया है। हम इन अभिलाषाओं को अपने जीवन को नियन्त्रित करने से कैसे रोक सकते हैं?(रोमियों ६:११–११४)

५. परीक्षाओं का सामना करने के लिए परमेश्वर ने हमें क्या दिया है? (रोमियो ८:८–९; १ कुरि. १०:१३ व इब्रा. २:१८)

चौथा दिन

उत्पत्ति ३:८–२४

१. आदम और हव्वा के पाप का क्या परिणाम हुआ? (अपने उत्तर में पद ७ को अवश्य शामिल करें)

२. आदम ने पाप के लिए किस पर दोष लगाया?

३. हव्वा ने पाप के लिए किस पर दोष लगाया?

४. परमेश्वर ने किस पर दोष लगाया? (रोमियों ५:१२–१४)

५. परमेश्वर द्वारा ठहराये गये श्राप का उल्लेख करें:

सर्प पर (इब्रा २:१४–१५)

आदम पर

हव्वा पर

पृथ्वी पर

६. १ यूहन्ना १:८–९ पढ़ें। क्या आप परमेश्वर के सम्मुख किसी पाप का अंगीकार करना चाहते हैं ?

पाँचवा दिन

उत्पत्ति ३:२०–२४ पढ़ें

१. आदम और हव्वा के पाप के कारण किस चीज़ का नाश हो गया?

२. पद २१के अनुसार परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए किस चीज का इन्तेज़ाम किया?

३. इब्रा.९:२२ के अनुसार हम लहू का बलिदान चढ़ाने के बारे में क्या सीखते हैं?

४. “ देखे परमेश्वर का मेम्ना , जो सम्पूर्ण जगत के पापों को उठा लिए जाता है?” हम इस सच्चाई को किस प्रकार देखते हैं?(यूहन्ना १:२९)

छठा दिन

शिक्षा २ : मनुष्य का पतन

मूल पाठ: अध्याय २–३

मुख्य पद : अध्याय ३:६ “ जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि के लिए चाहने योग्य भी है, तब उस में से तोड़कर खाया और अपने पतित को भी दिया, और उस ने भी खाया।

मुख्य वाक्य: आदम और हव्वा परीक्षा में पड़े और उन्होन अपने पाप का परिणाम भुगता, परन्तु परमेश्वर ने उनसे छुटकारे क बीज अर्थात वशं की प्रतीज्ञा की।

जीवन का सिद्धान्त: उन पापों को देखने या पहचानने के लिए हमारी आंखें खुल जाएं जो हमे परमेश्वर पिता से दूर ले जाते हैं ताकि हम यीशु के लहू के द्वारा अशुद्ध होने के लिए अपने पापों का अंगीकार कर सकें।

सारांश: अध्याय २ की शुरूआत सबत के दिन के अनुसंधान के प्रारम्भ से होता है। अपने सारे कामों से खुश व सन्तुष्ट होकर परमेश्वर ने सातवे दिन विश्राम किया। विश्राम के लिए इब्रानी शब्द “सबत” है। परमेश्वर ने हमारे लिए एक उदाहरण या आदर्श ठहरा दिया, ताकि हम उसका अनुकरण करते हुए एक दिन परमेश्वरके साथ संगति और आनन्द मनाने के लिए अलग करें। इसके सबसे पहले अनुपालन का हम निर्गमन १६:२३ में पाते हैं, जहां परमेश्वर मूसा को दस आज्ञाओं में से एक आज्ञा सबत के सन्दर्भ में देते हैं। सबत को मानने से बहुत फायदे और आशीष प्राप्त होती है जिसका वर्णन यशायाह ५८:१३–१४ में किया गया है।

बाकि का अध्याय २ हमारे पूर्वज अर्थात आदम की सृष्टि हेतू समर्पित है। उत्पत्ति २:७ “ और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिटटी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया। ” मनुष्य की सृष्टि जानवरों की सृष्टि से बिल्कुल अलग है।

उत्पत्ति १:२७ मं लिखा है “ परमेश्वर ने मुनष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने जी स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की। इसे अपने शब्दों में कहने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि परमेश्वर ने आदम में अपना श्वास फूंका और वह जीवित प्राणी बन गया। प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमेश्वर का जीवित श्वास या उसका आत्मा बहुत जरूरी है। यह प्राण और मन को दर्शाता है। यह ज्ञानेन्द्रियों,स्नेह और भावनाओं को प्रगट करता है। यह हमारी इच्छा को व्यक्त करता है। यह मनुष्य को उसके सृष्टिकर्ता के प्रति भावनात्मकता और बुद्धिमानी के साथ प्रतिउत्तर देने के काबिल बनाता है। परमेश्वर ने मुनष्य को अपने साथ संगति का आनन्द उठाने के लिए बनाया है जिसके द्वारा हमारे जीवन को सही मायने और अहमियत प्राप्त होती है। एक उददेश्य जिसकी तलाश हर व्यक्ति करता है।

क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य का स्त्री व पुरूष करके बनाया तो यह कहना बिल्कुल अनुचित नहीं होगा कि विवाह परमेश्वर के द्वारा ही नियोजित किया गया था। परमेश्वर रिश्तों का बनाने वाला है। उसकी बुद्धि के अनुसार उसने कहा कि “आदमी के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं है, अत: उसने उसके लिए सहायक को बनाया। इब्रानी शब्द म्रमत (ऐज़ेर) का अर्थ “ सहायक”, “सहारा देने वाला” व “साथी है। कई जगहों पर इसका अर्थ “ साथ मिलकर काम संभालने वाले” के रूप में प्रगट किया गया है।

यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि उसने आदमी को सर्वप्रथम अपने साथ संगति करने के लिए बनाया। फिर उसने स्त्री को बनाया ताकि वह पुरूष के साथ संगति करे व उसे संभाल। जैसा कि यीशु मरकुस १०:६—९ में स्पष्त करते हैं, विवाह को व्यवहारिक जरूरतों की पूर्ति करने के लिए नहीं बनाया गया वरन प्रारम्भ में विवाह से परमेश्वर की इच्छा यह थी कि इसके द्वारा आत्मिक और शारीरिक बन्धन बंध सके। और यह बन्धन परमेश्वर के साथ हमारी संगति को दर्शाता है। दोनो को परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया था और दोनों ही परमेश्वर के अनुग्रह व प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करने क लिए संगी वारिस थे। जैसा कि गलातियों ३:२७—२९ में लिखा है “ क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनो ने मसीह का बपतिस्मा लिया है, उन्होने मसीह का पहिल लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास न स्वतन्त्र; न कोई

नर न नारी क्योंकि तु सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो तो इब्राहीम के वंश और प्रतीज्ञा के अनुसार वारिस भी हो। ”

अध्याय ३ हमारे अध्ययन में सबसे महत्वपूर्ण अध्याय है। इस अध्याय में मनुष्य के पाप, मृत्यु और पृथ्वी की दुर्दशा का मूल पाया जाता है। इस अध्याय में हम उद्धारकर्ता की सर्वप्रथम प्रतीज्ञा को भी पाते हैं (उत्पत्ति ३:१५)। अध्याय की शुरूआत धूर्त सर्प के परिचय के साथ होती है। उसके बारे में ज़्यादा जानकारियां उपलब्द नहीं करायी गयी है लेकिन थोड़ा सा आगे पढ़ने पर हमें ज्ञात हो जाता है, कि वह परमेश्वर का विरोधी व धोखा देने वाला है।

रोमियों ८:२० कहता है कि “क्योंकि पृथ्वी अपनी इच्छा से नहीं, पर अधीन करने वाले की ओर से अधीन की गई।” पृथ्वी को शापित करके मनुष्य के अधीन कर दिया गया है। जिस प्रकार से परमेश्वर ने चेतावनी दी थी, नाश और मृत्यु पाप के द्वारा राज्य करने लगे।

श्राप के बावजूद भी हम आदम और हव्वा की सुरक्षा के लिये परमेश्वर के प्रयोजन को पद २० व २१ में देख पाते हैं; जब परमेश्वर ने उन दोनों के लिये जानवर की खाल के अंगरखे बनाए। यह क्षण शिक्षा का क्षण भी था, क्योंकि उस समय के पश्चात पाप के प्रायश्चित के लिये लहू बहाया जाना आवश्यक हो गया। सम्पूर्ण बाइबल में हम बलिदान द्वारा लहू बहाए जाने को देखते हैं और जिसका अंत मसीह द्वारा क्रूस पर सम्पूर्ण मानवजाति के लिये प्रायश्चित के लहू बहाए जाने से होता है।

परमेश्वर, शैतान व मनुष्य के चरित्र की प्रारम्भिक समझ के बिना उत्पत्ति की बुनियादी समझ को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। मनुष्य के पतन के बाद से ही परमेश्वर की करूणा और उसकी सामर्थ्य पर संदेह होता रहा है। हम लोग सोचते हैं कि परमेश्वर हमारी भलाई नहीं चाहता, वह हमारे लिये नहीं लड़ता, वह हमसे दूर रहता है और वह गुस्सैल तथा देखभाल करने वाला नहीं है। इन झूठों के कारण ही शैतान ने हव्वा को परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाए स्वयं पर भरोसा करने के लिये बहका दिया था। दुर्भाग्य से हम भी ऐसा ही करते हैं। हमें अपने शत्रु के इन विनाशकारी औज़ारों व झूठ को पहचान लेना चाहिये, जो हमारे परमेश्वर की महिमा को चुराना और हमें परमेश्वर की घनिष्ठ संगति जो हमारे लिये अति आवश्यक है, से अलग रखना चाहता है। हमें उन बातों को हमारे प्राण के शत्रु के रूप में देखना चाहिये और हव्वा के समान जिन झूठ बातों में हम फंस गए थे, उनसे तौबा करनी चाहिये।

परमेश्वर के चरित्र के सम्बन्ध में धोखा खाने के अंतर्गत् शैतान अर्थात् हमारे शत्रु की भूमिका व मनुष्य की ज़िम्मेदारी को भ्रमित करना या नज़रअंदाज करना हमारे लिये सामान्य बात है। यदि हम नहीं समझ पाते कि हम आत्मिक युद्ध के समय में जीवन व्यतीत कर रहे हैं; तो हम अधिकतर सच्चाई को गलत समझेंगे। हमें यह समझना बहुत आवश्यक है कि हमारा एक शत्रु है जो हमें धोखा देने तथा परीक्षा में घसीटने में सक्षम है। वह

हमें नाश करना व हमारे रिश्ते को पिता से तोड़ना चाहता है। परन्तु उसे क्रूस पर पराजित कर दिया गया है। वह हमें पिता के हाथों से छीन नहीं सकता है, उसे हम पर दोष लगाने का कोई अधिकार नहीं है, और न ही वह हमें पश्चाताप करने से रोक सकता है। पवित्र आत्मा जब हमारे पापों को ढांपने में, अपने दोष से छिपने और अपनी समस्या के लिये दूसरों पर दोष लगाते समय निरूत्तर करे, तो हमें उसका इंकार नहीं करना चाहिये। जब हम परमेश्वर के अधीन होकर, अपने शरीर को क्रूस पर चढ़ाकर शत्रु का सामना करते हैं, तो हम पर अनुग्रह होता है।

उत्पत्ति: आदिकाल का अध्ययन

शिक्षा तीन: अध्याय ४–५

मुख्य वाक्य: जलन व विश्वा**स की घटी के कारण, कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या की।**

पहला दिन

पढ़ें – उत्पत्ति ४:१–५; इब्रानियों ११:४,६ और इब्रानियों १२:१४–१५

१. इस धरती पर पैदा होने वाले पहले बच्चे कौन थे? उन्होंने क्या काम किये?

२. पढ़े गए अनुच्छेद के आधार पर, आपके विचार से परमेश्वर ने हाबिल की भेंट को क्यों स्वीकार किया और कैन की भेंट को क्यों नहीं?

३. उत्पत्ति ४:१–५ के आधार पर परमेश्वर, हाबिल और हाबिल का कत्ल करने से पहले कैन का जीवन के प्रति क्या रवैया था?

४. आपके विचार से कैन किस कारण अप्रसन्न या क्रोधित था?

५. इब्रानियों १३:१५–१६ के अनुसार कौन से दो बलिदान परमेश्वर को भाते हैं?

दूसरा दिन

पढ़ें – उत्पत्ति ४:६–८

१. उत्पत्ति ४:६–८ की तुलना १ कुरिन्थियों १०:१३ से करें। उत्पत्ति ४:६–८ में कौन से वाक्य बताता है कि परमेश्वर ने कैन के लिये परीक्षा से बाहर भागने का मार्ग तैयार किया था?

२. उत्पत्ति ४:६–७ किस प्रकार से कैन के अप्रसन्न हृदय के प्रति परमेश्वर की करूणामय समझ को दर्शाता है?

३. आपके विचार से कौन सा पाप कैन के हृदय को उकसा रहा था?

४. १ यूहन्ना ३:१०–१६ के अनुसार एक विश्वासी क्या करता है?

५. १ यूहन्ना ३:१२ के अनुसार कैन ने अपने भाई हाबिल का कत्ल क्यों किया?

तीसरा दिन

पढ़ें — उत्पत्ति ४:९—१६

१. वचन के द्वारा साबित करें कि कैन अपने भाई की हत्या के परिणाम से खेदित हुआ, परन्तु एक सच्चे हृदय से पश्चाताप नहीं किया।

२. २ शमूएल १२:१३ व भजन संहिता ५१ अध्याय पढ़कर दण्डाज्ञा मिलने पर दाऊद व कैन के रवैये व बातों की तुलना करें।

३. १ यूहन्ना १:५—१०, भजन संहिता ३४ अध्याय और भजन संहिता ६८:१८ हम से हमारे पापों व परमेश्वर द्वारा हमें स्वीकार करने के बारे में क्या कहते हैं।

चौथा दिन

पढ़ें — उत्पत्ति ४:१६—२६

१. यह अनुच्छेद किस प्रकार से निम्नलिखित बातों को प्रगट करता है:

क. कैन के वंशजों ने परमेश्वर को नज़रअंदाज किया और उसकी आज्ञा न मानी।

ख. कैन के वंशजों को बहुविवाह और हत्या करने पर घमण्ड था।

२. हाबिल की मृत्यु के पश्चात हव्वा ने परमेश्वर की सहायता का कैसे अनुभव किया? कठिन समयों में परमेश्वर ने किस प्रकार आपकी सहायता की? (१ कुरिन्थियों १:४)

३. यहूदा १४—१५ पद से हम हनोक के बारे में क्या सीखते हैं? और इब्रानियों ११:५—६ से?

४. हनोक के समान दूसरों को प्रभावित करने के लिये हम अपने परिवार व समाज में किन व्यक्तिगत् आदतों को विकसित कर सकते हैं? (मीका ६:८; इब्रानियों १२:१—३ और यूहन्ना १:७—९ को भी देखें)

पाँचवां दिन

पढ़ें — उत्पत्ति ५ अध्याय

१. पाप के परिणाम को दर्शाने के लिये कितनी बार आप "तत्पश्चात वह मर गया" लिखा हुआ पाते हैं?

२. पाप और मृत्यु के सन्दर्भ में पौलुस रोमियों ५:१२ और ६:२३ में क्या कहता है?

३. सबसे ज़्यादा आयु वाला व्यक्ति कौन था? उसकी आयु कितनी थी?

छठवां दिन

शिक्षा ३: "मेरा तरीका या परमेश्वर का तरीका"

मूल पाठ:	अध्याय ४—५
मुख्य वचन:	अध्याय ४:७, "यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी ? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी और होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा।"
मुख्य वाक्य:	जलन व विश्वास की घटी के कारण, कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या की।
जीवन का सिद्धान्त:	विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है।

सारांश: हव्वा की पहली संतान कैन था। कितने आनन्द की बात है। हव्वा को शायद आशा होगी कि वह अध्याय ३:१५ में की गई प्रतिज्ञा का पुत्र है; लेकिन कुछ वर्षों के बाद हम देखते हैं कि उसकी वजह से हन्ना को कितना दु:ख सहना पड़ा।

हव्वा ने एक और पुत्र का जन्म दिया, जिसका नाम हाबिल रखा गया। दोनों बेटे परमेश्वर के सम्मुख अपनी भेंटों को लाने की ज़िम्मेदारी को जानते थे, लेकिन केवल हाबिल की भेंट परमेश्वर के सम्मुख ग्रहण—योग्य ठहरी। अध्याय ४:४ बताता है, "परमेश्वर ने हाबिल और उसकी भेंट को ग्रहण किया।" यह अनुच्छेद हमें यह नहीं बताता कि परमेश्वर ने कैन की बजाए हाबिल की भेंट को क्यों स्वीकार किया। हो सकता है कि इसकी वजह रक्तहीन भेंट का होना हो, क्योंकि परमेश्वर ने आदम और हव्वा के वस्त्र का इन्तेजाम करते समय रक्तबलि का उदाहरण प्रस्तुत किया था। यह बलिदान यीशु द्वारा सारे जगत के लिये बहाए जाने वाले लहू का प्रतिरूप था (१ कुरिन्थियों ५:२१)। परन्तु यदि दोनों लड़के पश्चाताप का बलिदान चढ़ाने की बजाए परमेश्वर को भेंट प्रदान कर रहे थे, तो उनकी मनोदशा से काफी फरक पड़ता था। इब्रानियों ११:४ हमें बताता है कि

हाबिल ने विश्वास के साथ अपनी भेट चढ़ाई। मगर कैन ने ऐसा नहीं किया, जो उसके व्यवहार और कार्यों के द्वारा प्रगट हुआ।

कैन के वंशज झगड़ों का केन्द्र बन गये, जिससे परमेश्वर के प्रति उसके असली भाव प्रगट हुए व जिन्होंने दुष्टता के फलों को उत्पन्न किया। कैन को लगा कि उसके साथ अन्याय हुआ और अपनी अप्रसन्नता के लिए उसने अपने भाई को दोषी ठहराया। वह याकूब ४:१–२ में लिखी बातों का सटीक उदाहरण है, "तुम में लड़ाईयाँ और झगड़े कहाँ से आ गये? क्या उन सुख–विलासों से नहीं, जो तुम्हारे अंगों में लड़ते–भिड़ते हैं? तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; इसलिये तुम हत्या और डाह करते हो।" कैन अपनी महिमा के लिए अपने तरीके से जीना व अपने तरीके से परमेश्वर की आराधना करना चाहता था। परमेश्वर ने अपनी दया में, कैन का सामना किया और बताया कि जो कुछ हुआ, उसके लिए उसका व्यवहार और कार्य जिम्मेदार थे। परमेश्वर ने कैन को सचेत किया था कि वह अपने घमण्ड और स्वार्थी महत्वाकांक्षाओं के लिए पश्चाताप करे व पाप को त्याग दे, जिसके द्वारा उसके जीवन नियन्त्रित होने पर था। दुर्भाग्यवश कैन ने परमेश्वर की सलाह न मानकर जानबूझकर अपने भाई की हत्या कर दी। पुन: जब परमेश्वर से उसका सामना हुआ और परमेश्वर ने उसे उसके पापों की सजा सुनाई, तब भी वह परमेश्वर से गुस्सा होकर कहने लगा, "मेरा दण्ड मेरी सहन शान्ति से बाहर है!" (उत्पत्ति ४:१३)। कैन का नुक्सान अनन्त था। उसके कामों के द्वारा उसके हृदय में छिपा पाप बाहर आ गया। यह बात हम सबके लिए भी एक चेतावनी है। क्या हमारे भीतर ऐसी प्रवृति पायी जाती है। जिसका फल दुष्ट काम हो? आईये, हम दौड़कर परमेश्वर के सिंहासन के पास जायें और नम्रता से उसके सम्मुख पश्चाताप करें। कैन ने परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर होकर एक परिवार बनाया। उसकी वंशावली उत्पत्ति के अध्याय ४:१६–२४ में दी गयी है। दु:ख की बात है, कि केवल हनोक, जो कैन का पहला पुत्र था, परमेश्वर के मार्गों पर चलने वाला हुआ।

हो सकता है कि हनोक ने पहले परमेश्वर का अनुसरण नहीं किया हो। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके पुत्र जन्म के उपरान्त उसका मन परिवर्तन हुआ। बाकी के वर्षों में हनोक परमेश्वर के साथ चला फिरा। उसके नाम का अर्थ "समर्पित" है, और उसी तरह उसने अपना जीवन व्यतीत किया। ३०० वर्षों तक उसने एक भ्रष्ट समाज के बीच आत्मिक शान्ति और सुन्दरता से भरा जीवन व्यतीत किया। विश्वास–योग्यता के साथ रहने के लिए यह काफी लम्बा समय है। इब्रानियों ११:५ बताता है कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया। बल्कि परमेश्वर ने उसे स्वर्ग में उठा लिया और उसने कभी मृत्यु का स्वाद नहीं चखा।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को हाबिल के स्थान पर एक और पुत्र दिया, जिसका नाम शेत रखा गया। उत्पत्ति के अध्याय ४ के अन्त में शेत के वंश का वर्णन दियाा गया है। शेत और उसके वंशजों को "परमेश्वर को पुकारने वाले लोगों" के रूप में जाना जाता है (उत्पत्ति ४:२६)। शेत के वंश कैन के वंशजों के समकक्ष जीवन व्यतीत कर रहे थे, परन्तु उन्होंने अपने लिए जीवन व्यतीत करने की बजाय विश्वास–योग्यता के साथ परमेश्वर के लिए जीने का चुनाव किया।

उत्पत्ति ५ अध्याय हमें ईश्वरीय पूर्वज नूह के बारे में बताता है, जिन्होंने बुरे समय में परमेश्वर के लिए जीवन व्यतीत किया। हम इन वंशावलियों में देखते हैं कि लोग व्यक्तिगत् रूप से परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसलिए परमेश्वर लोगों को नाम लेकर बुलाते हैं, उनके जीवनकाल और वंशजों का जिक्र करते हैं। शेत की वंशावली में ही यीशु मसीह का जन्म हुआ। सबसे महत्वपूर्ण बात हमने देखी कि हर एक पीढ़ी को अपनी मर्ज़ी से जीवन व्यतीत करने की बजाय परमेश्वर पर विश्वास करने व उसकी आज्ञाओं का पालन करने का चुनाव करना चाहिए। यह हमारे हृदय का मामला है। आप अपना रास्ता चुनेंगे या उसका?

बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है!

उत्पत्ति: आदिकाल का अध्ययन

शिक्षा चार: अध्याय ६–७

मुख्य वाक्य: परमेश्वर दुष्टों का न्याय करता व धर्मी की सुरक्षा करता है।

<u>पहला दिन</u>

पढ़ें – उत्पत्ति ६:१–१२; २ पतरस २:४–९, ३:१–१०;यहूदा ५–७ पद

१. पृथ्वी पर पायी जाने वाली दुष्टता का वर्णन करें।

२. पृथ्वी की हालत को देखकर परमेश्वर को कैसा महसूस हुआ?

३. इस अनुच्छेद से हम परमेश्वर के चरित्र के बारे में क्या सीख सकते हैं?

४. आपके विचार से महा जलप्रलय द्वारा न्याय करने के पीछे क्या कारण रहा होगा? उसने इतना लम्बा इन्तेज़ार क्यों किया? (उत्पत्ति १५:१६ और २ पतरस ३:९)

५. जब परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य की आयु "१२० वर्ष की होगी", तब उसका क्या मतलब था? (उत्पत्ति ६:३; १ पतरस ३:२०)

<u>दूसरा दिन</u>

पढ़ें – उत्पत्ति ६:८–२२

१. नूह को कैसे पता चला कि अब नाव में जाने का समय है?

२. वह अपने साथ नाव में किसको ले गया?

३. द्वार किसने बन्द किया?

४. पृथ्वी पर कितने समय तक वर्षा होती रही?

५. पद १७–२१ के अनुसार, पानी का स्तर कितना ऊँचा उठा और उसका परिणाम क्या हुआ?

तीसरा दिन

पढ़ें – उत्पत्ति ६:९–८:१९ और इब्रानियों ११:७

१. नूह ने परमेश्वर को कैसे प्रसन्न किया?

२. क्या जलप्रलय से पहले कभी बारिश हुई थी? हवाला दें।

३. बाद से सम्बन्धित कौन सा वाक्य दर्शाता है कि वर्षा के साथ–साथ धरती पर भयंकर भूचाल आया होगा?

४. परमेश्वर ने किस प्रकार नूह की सहायता और देखभाल की?

५. किस प्रकार परमेश्वर ने आपके प्रति सुरक्षा और देखभाल प्रदान की है?

चौथा दिन

पढ़ें – उत्पत्ति ७:११–२४; मत्ती २४:३६–४२; और लूका १७:२६–२७

१. मत्ती और लूका के समय के लोग किस प्रकार नूह के समय के लोगों के समान थे?

२. वे कौन से काम करना भूल रहे थे, जिसे परमेश्वर करवाना चाहते थे?

३. मसीह हमें इस समय, इस सन्दर्भ में क्या चेतावनी देते हैं?

४. वर्तमानकाल में हम किस प्रकार २ पतरस ३:३–७ का उपयोग कर सकते हैं?

पाँचवा दिन

पढ़ें – उत्पत्ति ६:१–७–२४

१. आप परमेश्वर के चरित्र के विषय में क्या सीखते हैं?

२. किसी व्यक्ति को आशीषित करने के लिए इस सप्ताह आप क्या कर सकते हैं ?

छठा दिन

अध्याय ४ — "दुष्ट सावधान रहे"

मूल पाठ: अध्याय ६—७

मुख्य वचन : अध्याय ६:१७—१८,"और मैं आप पृथ्वी पर जल प्रलय करके सब प्राणियों को, जिनमें जीवन का प्राए है, आकाश के नीचे से नष्ट करने पर हूँ। और सब जो पृथ्वी पर है मर जाएंगे। परन्तु तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ, इसलिए तू अपने पुत्रों, स्त्री और बहुओं सेज जहाज में प्रवेश करना। "

मुख्य वाक्य: परमेश्वर दुष्टो का न्याय व धर्मी की सुरक्षा करता है।

जीवन सिद्धान्त: नूह की आज्ञाकारिता का परिणाम उसके, उसके परिवार और आने वाली पीढ़ी के लिए आशीष का कारण ठहरी।

साराशं: उत्पत्ति ६:१—४ को अनेकों को दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। एक दृष्टिकोण से हम "परमेश्वर के पुत्रों को "शेत के वंशज के रूप में देख सकते हैं। इन पुरूषों को ईश्वरीयता व व्यक्तिगत आत्मिकता के कारण परमेश्वर के पुत्र कहा गया। मानव पुत्रियों का अर्थ, इसके विपरीत कैन के वंश में पैदा हुई स्त्रियों से है। इस प्रकार के मिश्रित विवाह व उनके परिणाम अर्थात पुरूषों के पतन से अप्रसन्न होकर परमेश्वर ने मनुष्य के जीवन काल को छोटा कर दिया और अन्त में जलप्रलय के द्वारा उन्हे दण्ड दिया। दूसरे दृष्टिकोण(मतलब) के अनुसार " परमेश्वर के पुत्र" गिराये गये स्वर्गदूत थे, जिन्हे धरती पर वास करने के लिए स्वर्ग छोड़ना पड़ा और उन्होने मानव पुत्रियों से विवाह कर लिया। परमेश्वर के पुत्रों वाक्य अय्यूब १:६; २:१ और ३८:७ में सामने आता है। जहां पर इसका अनुवाद "स्वर्गदूतों " किया गया है। नये नियम के दो अनुच्छेअ अर्थात २पतरस २:४—५ और यहूदा ६—७ इस अनुवाद को मान्यता देते हैं।

एक बात स्पष्ट है कि ६:१—४ की घटना मानव जाति के पतन में सहयोग प्रदान करती है। इस पतन की वजह से परमेश्वर का विनाशकारी न्याय अर्थात जलप्रलय तेजी से मनुष्य पर आन पड़ा। सारे लोग नाश होने वाले थे। पानी का स्तर पहाड़ों की ऊँचाई से भी ज्यादा चढ़ गया था (७:१९—२०) और बाढ़ का पानी करीब एक वर्ष तक बना रहा (७:६ और ८:१३), जिससे सारी धरती पानी में डूब गयी(२ पतरस ३:३—७)। हमें एक बात को कभी नज़र अन्दाज़ नहीं करना चाहिए कि इन सब बातों के कारण परमेश्वर का हृदय प्रसन्न नहीं था, बल्कि वह मनुष्य के पापों के कारण बहुत दु:खी था। जलप्रलय दुष्टों और धर्मियों दोनों के लिए दया और करूणा से भरा कार्य था। परमेश्वर मनुष्य को दुष्ट प्रवृति के साथ और अधिक बढ़ने की अनुमति नहीं दे सकता था।

परमेश्वर ने नूह के सामने अपनी योजना प्रगट की और नूह ने परमेश्वर की योजना पर विश्वास किया। उसने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार काम करके अपने विश्वास का प्रगट किया जिसे उसके लेखे में धार्मिकता गिना गया। (इब्रानियों ११:७)। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि यदि आपको अपने पुत्रों के साथ–२ अपनी बहुओं को भी समझाना पड़े कि परमेश्वर ने मुझसे बात की और मुझे इस मरूस्थल के बीच में नाव बनाने का आदेश दिया है, जहां पहले कभी बारिश नहीं हुई हो, तब क्या होगा? नूह एक विश्वासी व्यक्ति था। उसने बल्लियों और तख्तों को तैयार किया और १२० वर्षों तक मजाक बनाये जाने को सहता रहा, उसने उस समय प्रचार किया जबकि परमेश्वर के दण्ड या न्याय के बारे में बात करना मनगढ़न्त वैज्ञानिक कहानी के जैसे प्रतीत होता था। नूह और उसके परिवार के लिए यह छोटा काम नहीं था। और दुर्भाग्यवश उन्हे बहुत निराशा हुई होगी,क्योंकि किसी भी व्यक्ति ने उनके प्रभावशाली और नियमित प्रचार का सकारात्मक प्रतिउत्तर नहीं दिया था। फिर भी, नूह के ईमानदारी के साथ वर्षों काम और फलदायक सेवकाई के बाद, नूह और उसके परिवार ने परमेश्वर की विश्वास योग्यता को देखा।

यह बहुत ही रोचक बात है कि नूह के नाम का अर्थ “विश्राम ” है। इस दुष्ट समाज के बीच जीवन बिताते हुए उसके माता पिता को भविष्य में विश्राम और परिवर्तन की आशा थी। उन्हे पाप से संघर्ष करने से विश्राम पाने की आवश्यकता थी। नूह की नाव ने वह विश्राम और आशा प्रदान की। यह पुराने नियम में मसीह की एक तस्वीर है, अर्थात वह आशा व विश्राम का स्थान जो हमें हमारे पापों से और हमें परमेश्वर के क्रोध से बचाता है।

नूह की आज्ञाकारिता का परिणाम उसके, उसके परिवार व आने वाली पीढ़ी के लिए

बहुत सी आशीष हुआ।

उत्पत्ति : आदि काल का अध्ययन

पाँचवी शिक्षा: अध्याय ८—९

विषयगत वाक्य: परमेश्वर ने नूह और सम्पूर्ण मानवजाति के साथ बिना किसी शर्त के एक वाचा बाँधी।

पहला दिन

उत्पत्ति ८:१—१९ पढें

१. अध्याय ८ की पहली आयत में हम किस प्रकार नूह व उसक परिवार के प्रति परमेश्वर की देखभाल को देख सकत हैं?
२. वह नाँव कहां जा टिकी?
३. कितने दिनों के बीतने पर नूह ने खिड़की खोली?
४. किन दो पक्षियों को नूह ने बाहर भेजा और क्या हुआ?
५. नूह को कैसे पता चला कि अब नाव से उतरने का उचित व सुरक्षित समय है?

दूसरा दिन

उत्पत्ति ८:२०—२२ पढ़ें

१. नूह ने नाव छोड़ने पर पहला काम क्या किया?
२. यह काम हमें नूह के बारे में क्या बताता है?
३. उत्पत्ति ८:२१ हमें मानव जाति के बारे में क्या बताता है?

तीसरा दिन

१यूहन्ना २:२,भजन संहिता ५१:१७, रोमियो १२:१ और इब्रानियों १३:१५–१७ पढ़ें

१. अब हम परमेश्वर के लिए जानवरों की बलि क्यों नहीं देते?

२. वर्तमान काले में आप परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए कौन सा बलिदान चढ़ा सकते हैं (रोमियों १२:१)?

चौथा दिन

उत्पत्ति ९:१–७

१. परमेश्वर नूह को यहां पर कौन सी अनन्त प्रतीज्ञा प्रदान करते हैं?

२. परमेश्वर ने नूह से क्या करने और क्या न करने के लिए कहां?

३. किसी व्यक्ति के जीवन को छीनने में सबसे बड़ी गलती क्या है?

४. हम किस प्रकार प्रगट कर सकते हैं कि मानवीय जीवन परमेश्वर के लिए बहुमूल्य है?

५. हमारा जीवन इतना कीमती क्यों है?

पाँचवा दिन

उत्पत्ति ९:८–१७ पढ़ें

१. पद ९ में किसके लिए उस वाचा को दोहराया गया?

२. परेश्वर की प्रतीज्ञा को याद दिलाने के लिए हमें क्या चिन्ह दिखाया गया है?

३. क्या परमेश्वर ने आपके लिए अपनी प्रतीज्ञा को पूरा किया? यह आपके लिए क्यों मायने रखता है?

छठा दिन

अध्याय पांच: “नूह की वाचा”

मूल पाठ: अध्याय ८—९ मुख्य पद: अध्याय ९:९ “ सुनों, मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पश्चात जो तुम्हारा वंश होगा उसके साथ भी वाचा बांन्धता हूँ। ” मुख्य वाक्य: परमेश्वर ने नूह और सम्पूर्ण मानवजाति के साथ बिना शर्त वाचा बांधी। जीवन सिद्धान्त: परमेश्वर की आज्ञा मानने से असम्भव,सम्भव हो जाता है।

साराशं: नूह का नांव से बाहर निकलना इतिहास में नई शुरूआत करता है। नूह और सम्पूर्ण मानवजाति के साथ परमेश्वर ने एक वाचा बांधी। इस वाचा में मानव जाति के क्रम हेतू परमेश्वर का प्रयोजन शामिल था।

१. प्रथम, मेघधनुष के चिन्ह से प्राकृतिक महाजलप्रलय मुक्त जीवन की प्रतीज्ञा द्वारा, प्रकृति को स्थिर कर दिया गया ।

२. दूसरा, जानवरों व पौधों को मनुष्य के भोजन के लिए दिया गया। जल प्रलय से पूर्व मानव जीवन केवल फल व सब्जियों पर आधारित था।

३. अगला, जीवन लेने का अधिकार केवल परमेश्वर के हाथों में रहा। चेतावनी दी गयी कि “जो कोई मनुष्य का लहू बहायेगा, उसका लहू मनुष्य से ही बहाया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है। ” इसी चेतावनी को बाद में निर्गमन २०:१३ में दोहराया गया “तू हत्या न करना”। मनुष्य की कीमत उसके सृष्टिकर्ता के द्वारा ठहराई गयी है जो मनुष्य को बहुमूल्य जानता है।

४. एक बार फिर फूलो फलों और सारी पृथ्वी पर भर जाओ की आज्ञा दी गयी।

इन सारी बातों को बार–२ स्मरण कराना बहुत जरूरी था कि " मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है। "(८:२१)। जब तक धरती सुरक्षित हैं, तब तक परमेश्वर के अनुग्रह से मनुष्य का जीवन बना रहेगा। (८:२२)। परमेश्वर धर्मी व करूणामय दोनों था। उसने नूह से "वाचा बाँधते समय" अपनी दया प्रगट की (९:८–१७), जहां उसने प्रतीज्ञा की कि वह भविष्य में मनुष्य और जानवर को पानी के द्वारा कभी नाश नहीं करेगा। यह वाचा बिना शर्त बाँधी गयी थी। परमेश्वर ने अपने अनुग्रह में होकर एक प्रतीज्ञा करी और उस पर एक चिन्ह के द्वारा मुहर लगा दी। वह मुहर एक मेघधनुष था। अधिकतर हम आकाश में " परमेश्वर के धनुष को " अधूरा ही देखते हैं। लेकिन यहेजकेल, परमेश्वर की महिमा का बखान करते समय मेघधनुष के पूर्ण चक्र के दिखाई देने की बात करता है (यहेजकेल १:२८)।

प्रेरित यूहन्ना ने भी मेघधनुष के पूर्ण चक्र का जिक्र प्रकाशित वाक्य ४:३ में किया है। हम वर्तमान में केवल परछाई को देखते हैं लेकिन एक दिन हम मनुष्य के प्रति उसकी करूणा, प्रेम व बुद्धि के सम्पूर्ण चक्र को देखेंगे, हम उसकी महिका के पूर्ण चक्र को देख पाऐंगे।

सारे जगत में मानवजाति की पुन:उत्पत्ति नूह के तीनों पुत्रों अर्थात शेम हाम और येपेत के द्वारा हुई (९:१८–१९)। इसके द्वारा नूह के शराब पीकर मतवाला होने व उसके पुत्रों के काम की रोचक कहानी हमारे सामने आती है। हाम, शापित हुआ क्योंकि उसने अपने पिता को "देखा" जिसका मतलब है कि उसने जानबूझकर व बुरी मनसा के साथ अपने पिता के कामों को देखा।

इसके अतिरिक्त उसने बड़े चाव के साथ अपने भाईयों को इस घटना के बारे में बताया। शेम और येपेत ने अपने पिता को लज्जित अवस्था में देखने से इनकार करके अपने पिता का आदर किया। वे परमेश्वर पिता के ग्रहण योग्य ठहरे। हाम के पाप के बावजूद उसका वशं ध्यान

दिने जाने योग्य है। सदोम वासी, हाम के ही वंशज थे, जिन्हे परमेश्वर ने अपने पापों से फिरने का पूर्ण अवसर प्रदान किया और बाद में उन पर परमेश्वर का दण्ड प्रगट हुआ। मिस्री, बेबिलोन वासी,मायान्स, अजटेक्स सारे हाम के ही वंशंज थे, जो बहुत सी मानवीय अविष्कारों के खोज करने वाले थे।

आप नैतिक और आत्मिक रीति से किस समूह के भाग हैं? हाम के, जिसे दूसरों के पापों को देखने में मज़ा आता है और वे उसकी चर्चा दूसरों से भी करना पसन्द करता है? येपेत के, जिसके पास संस्कृति, शक्ति और क्षेत्रफन का फैलाव है? या शेम के, जिसकी पूर्व निर्धारित विशेषता थी कि परमेश्वर उसके हृदय, विचारों और कामों –उसके शब्दों, और उसके "तम्बू" में अर्थात स्वयं उसमें वास करता था? हम में से प्रत्येक जन के पास रोज, अपने भीतरी स्वभाव व बाहरी शब्दों में निर्माणकारी या नाशकारी होने का चुनाव होता है।

यदि हम परमेश्वर के अधीन होने का चुनाव करें, तब वह हम में "शुद्ध मन और हृदय उत्पन्न करेगा "(भजन ५१:१०)

परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने से असम्भव काम भी सम्भव बन जाता है।

उत्पत्ति : आदिकाल का अध्ययन

छठी शिक्षा : अध्याय ९–११

विषयगत वाक्य: परमेश्वर ने दूसरी बार जगत का न्याय किया।

पहला दिन

उत्पत्ति ९:१८–२९ और नीतिवचन ६:१६–१९

१. नाव से बाहर आने वाले नूह के पुत्र कौन कौन थे?

२. नूह क्या करने लगा और उसकी क्या गलती थी?

३. हाम, शेम और येपेत की अपने पिता के पियक्कड़पन के प्रति क्या प्रतिक्रिया थी?

दूसरा दिन

उत्पत्ति ९:२४–२९ और नीतिवचन ६:१६–१९

१. नूह ने अपने पुत्रों पर जिन श्रापों व आशीषों को बोला उन्हे सूचिबद्ध करें।

२. भविष्यवाणी के अनुसार किस पुत्र के वंशज दूसरे पर प्रभुता करेंगे?

३. नीतिवचन ६:१६ के आधार पर परमेश्वर किन बातों से नफरत करता है?

४. जब आपको दूसरों की कमज़ोरी व गलतियों का पता चलता है तो आप की प्रतिक्रिया कैसी होती है।

५. परमेश्वर आपसे कैसी प्रतिक्रिया प्राप्त करना चाहते हैं?

तीसरा दिन

उत्पत्ति १०:१–५

१. परमेश्वर ने हमें नूह के पुत्रों की सूची क्यों प्रदान की है?

२. क्या आप बाइबल के किसी अन्य हिस्से में वे नाम पाते हैं जो इस अध्याय में भी पाये जाते हैं? (उत्पत्ति १८:२० व प्रकाशितवाक्य २०:८)।

३. प्रेरितों १७:२७ के अनुसार, हम कैसे कह सकते हैं कि इतिहास में इन परिवारों के वंशज, उनका समय व स्थान संयोग से नहीं था?

४. देशों व सीमाओं का ज्ञान (प्रेरितों १७:२७) आप को अपने समय व वर्तमान स्थान को जोड़ने में कैसे सहायता प्रदान करता है?

चौथा दिन

उत्पत्ति १०:६—३२

१. उत्पत्ति १०:६—१७ से निम्रोद के बारे में तीन मुख्य बातें बताईये!

२. क्या सामर्थी/सम्पन्न व्यक्ति भला हो सकता है?

३. आपके विचार से निम्रोद एक भला व्यक्ति था या बुरा?

४. आव नीनवे(पद ११) के बारे में योना १:१—२ से क्या बता सकते हैं?

५. हमें इससे क्या शिक्षा मिलती है?

६. आपके विचार से उत्पत्ति १० को बाइबल से क्यो जोड़ा गया था?

पांचवा दिन

उत्पत्ति ११:१—९

१. दुनिया में कितनी प्रकार की भाषाएं हैं?

२. कारण बताएं, कि मनुष्य ने बावेल की मीनार क्यों बनायी?

३. किस प्रकार से इन लोगों ने उत्पत्ति ९:१,७ में दी गयी परमेश्वर की आज्ञाओं को उल्लंघन किया?

४. किस तरह हम और हमारा संसार आज इन लोगों के समान ही हैं?

५. क्या आप किसी ऐसी घटना का वर्णन कर सकते हैं जब आपकी अनाज्ञाकारिता के कारण आपके या दूसरों के जीवन में कोई गड़बड़ी पैदा हुई?

६. परमेश्वर ने मुनष्य की योजनाओं को नाश करने के लिए क्या किया?

७. हमारे संसार में परमेश्वर आज कैसे शामिल है?

८. सभी वर्ण जाति के लोग व संसार की सारी जातियां, किन तीन लोगों के द्वारा उत्पन्न हुई हैं?

छठा दिन

छठी शिक्षा: " जातियां "

मूल पाठ: अध्याय १०—११:९

मुख्य पद: अध्याय ११:९, " इस कारण उस नगर का नाम बेविलोन पड़ा, क्योंकि सारी पृथ्वी की भाष में जो गड़बड़ी है, वह यहोवा ने वहीं डाली, और वही से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया"।

विषयगत वाक्य: परमेश्वर ने संसार पर दूसरी बार अपना न्याय प्रगट किया।

जीवन का सिद्धान्त : परमेश्वर सारे लोगों व जातियों में श्रेष्ठ है और उसके न्याय हमेशा भला व उचित होता है।

सारांश: अध्याय १० में, परमेश्वर ने इतिहास के बहाव को संकीर्ण करके शेम के वंशजों से होकर बहने दिया। अध्याय ११ में वह इस बहाव को और भी ज्यादा संकीर्ण करके एक व्यक्ति अर्थात अब्राहम तक पहुंच जाता है।

अब्राहम को केन्द्र बिन्दू माने परमेश्वर उसके वंशजों के द्वारा शारीरिक और आत्मिक रूप से विस्तार करना शुरू करते हैं। यह परिवार अर्थात यहूदी समाज, पुराने नियम और ज्यादातर नये नियम का केन्द्र बिन्दू है। नूह के वंशज होने के नाते, उनके नाम व भौगोलिक स्थिति को सूचीबद्ध किया गया है, वे हमें बाइबल व इतिहास को समझने में सहायता कने के लिए महत्वपूर्ण कड़ी हैं।

उत्पत्ति ११ की प्रथम ९ आयतें मानवजाति के दूसरे बड़े न्याय के बारे में बताती हैं। वे अब चीनार के तटीय इलाके में आकर बस गये हैं। जिसे हम बेबीलोन के मैदाने के नाम से भी जानते हैं, जो फरात और तिरगिस नदी के बीच स्थित है। वर्तमान में इसे फारस की खाड़ी के नाम से जाना जाता है। लोगों ने अपने मूल पुरूष नूह के विश्वास पर चलना छोड़ दिया। बाढ़ की चेतावनी को अपने दिल पर लेने की बजाय, मनुष्यों ने परमेश्वर व उसकी आज्ञाओं के विरोध मे आने हेतू साझा किया। सर्वप्रथम, हम मनुष्य के घमण्ड को देखते हैं जिसके तहत उसने पृथ्वी को भरने के प्रति परमेश्वर की आज्ञा को नज़र अन्दाज करके अपने मन के अनुसार खुद को व्यवस्थित करने का प्रयास किया। दूसरा, उनके घमण्ड में उन्होन परमेश्वर का विरोध करते हुए अपने नाम को महिमा देने के लिए एक मिनार का निर्माण करना शुरू किया, जिसे वे “स्वर्ग तक पहुचने वाली मिनार” कहते थे। यह आत्मिक महिमा थी जो सीधे तौर से परमश्वेर की स्तुति और महिमा का विरोध करती है। यह उसी तरह का घमण्ड था जिसके तहत शैतान ने परमेश्वर से बलवा किया व जिसके कारण आदम और हव्वा को फल खाने व “परमेश्वर के समान” होने के लिए उकसाया गया। परन्तु जिस तरह से परमेश्वर ने बाढ़ के समय में हस्तक्षेप किया उसी प्रकार एक बार फिर परमेश्वर ने धरती को दुष्टता के कारण नाश होने से बचाने हेतू हस्तक्षेप किया। उसने मनुष्य को निष्क्रिय कर दिया और उनकी भाषा में गड़बड़ी के कारण उनकी योजना विफल हो गयी। बाबुल के लोगों ने अपनी कीर्ति फैलाने के

लिए काम करने की कोशिश की इसलिए परमेश्वर ने उन्हे अलग–२ देशों और भाषाओं में विभाजित कर दिया।

वर्तमान काल में अपने चारों ओर नज़र दौड़ाने पर हमें ठीक ऐसी ही प्रवृति के व्यक्ति व देश दिखाई पड़ते हैं। बहुत से लोग अभिमानी व घमण्डी होकर,परमेश्वर के विराधी हो गये हैं। हम देखते हैं कि देशों को अपनी ताकत व महिमा अर्थात चमक पर घमण्ड है वे विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में अपनी उपलब्दियों पर फूले नहीं समाते,ऐसी चीज़ों को ज्योति का दर्जा दिया जाता है जो परमेश्वर के सिद्धान्तों के विरोधी होते हैं। केवल परमेश्वर ही हमारे हृदय की दशा को जानते हैं।

हो सकता है कि हमारी धार्मिक प्रणाली के द्वारा जिसके तहत हम, भले काम करना, रीति रिवाज़ पूरा करना या कलीसिया में प्रतिभागिता करते हैं, हम परमेश्वर के अनुग्रह या मनुष्यों की प्रसशां पाने के लिए प्रयास कर रहे हों। आपके लिए परमेश्वर और मनुष्यों में से किस की ओर से ग्रहण किया जाना महत्वपूर्ण है?

बाबुल के न्याय के पश्चात, परमेश्वर मनुष्य को छुटकारा देने की योजना को प्रगट करने लगे। उसने शेम की वंशावली से एक व्यक्ति अर्थात अब्राहम को चुना। अब्राहम के परिवार व इस्राए देश के द्वारा परमेश्वर दुनिया भर में अपना प्रकाशन और अपने बारे में संदेश को फैलायेगें और उसे सुरक्षित रखेंगे।

यह बात इब्रानी भाषा में लिखे धर्मशास्त्र द्वारा सत्य हुई और जिसे अब्राहम के परिवार अर्थात यहदी लोगों के जमाने से अभी तक सुरक्षित रखा गया है।

परमेश्वर सभी लोगों और देशों में श्रेष्ठ है और उसका न्याय हमेशा भला और उचित होता है।

उत्पत्ति : आदिकाल का अध्ययन

सातवी शिक्षा: अध्याय ११—१२

विषयगत वाक्य: परमेश्वर अब्राहम को बुलाते हैं।

पहना दिन

उत्पत्ति ११:२७—३२

१. अब्राहम का पिता कौन है?

२. अब्राहम के भाई का क्या नाम है?

३. अब्राहम की पत्नी का नाम क्या है और वचन का यह भाग हमें उसके बारे में क्या बताता है?

४. वे कहाँ जा रहे थे, और वे कितनी दूर पहुंचे थे?

दूसरा दिन

उत्पत्ति १२:१—३

१. परमेश्वर की बुलाहअ का जवाब देने पर अब्राहम ने पीछे क्या क्या छोडा?

२. परमेश्वर द्वारा अब्राहम को बुलाये जाते समय हम किन प्रोत्साहित करने वाली प्रतीज्ञाओं को पाते हैं?

३. गलातियों ३:८—९ आज हमारे जीवन में किस प्रकार लागू होता है।

४. निम्नलिखित अनुच्छेद को देखकर बतायें कि परमेश्वर के प्रति समर्पित होने वाले व्यक्ति के जीवन में उसकी बुलाहट का प्रभाव डालती है।

क. मत्ती ४:१८—२२

ख. मत्ती ८:२२

ग. मत्ती ८:३४–३६

घ. लूका १४:२६–३३

ड़. १ पतरस २:९; यूहन्ना २:१५–१७

५. इब्रानियों ११:१, ८–१० के अनुसार अब्राहम ने परमेश्वर की बात क्यों मानी?

क. क्या आप उपरोक्त अनुच्छेद से मेल खाती हुई किसी घटना का वर्णन कर सकते हैं जब आपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया हो?

ख. आज्ञा पालन करते वक्त हमारे पास कौन सी प्रतीज्ञाएं हैं?

तीसरा दिन

उत्पत्ति १२:४–७ पढें

१. अब्राहम ने जब हारान छोड़ा तब उसकी आयु कितनी थी? पढ़े गये अनुच्छेद की तुलना उप्तत्ति २५:७–८ से करें। वह जवान था, व्यस्क था या एक बूढ़ा व्यक्ति था?

२. कौन सा वाक्य या वचन बताता है कि आज्ञापालन करते समय अब्राहम ने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया था (उत्पत्ति १२:१–९ और रोमियों १०:११)?

३. अब्राहम ने अपने साथ किसको लिया?

४. अब्राहम के कनान देश पहुंचने पर परमेश्वर ने उसे कौन सी प्रतीज्ञा की?

चौथा दिन

उत्पत्ति १२:८–९

१. किस प्रकार से अब्राहम ने उत्पत्ति ८:२० में नूह के समान परमेश्वर को प्रतिउत्तर दिया?

२. यदि आपने अब्राहम की तरह मसीह का अनुकरण किया है, तब आप अपने जीवन के एक अनुभव को लिखें?

३. उत्पत्ति १२:९ में अब्राहम ने आज्ञापालन किया और वह बिना रूक आज्ञाकारी बना रहा। निम्नलिखित वचनों के अनुसार, मसीही होने के नाते हम अपने आगे के जीवन को किस प्रकार व्यतीत करेंगे?

क. कुलुस्सियों १:२३

ख. कुलुस्सियों २:६—७

ग. इब्रानियों ६:१

घ. इब्रानियों १०:३५—३८

ड़. १पतरस २:२

पांचवा दिन

उत्पत्ति १२:१०—२०

१. आपके विचार से जब अकाल पड़ा तब अब्राहम परमेश्वर के मार्गदर्शन का खोजी था या वह अपने सामान्य ज्ञा का इस्तेमाल करने का प्रयास कर रहा था?

२. पद ११—१३ पदों में किस बात ने अब्राहम के निर्णय को प्रेरित किया?

क. उसका पाप क्या था?

ख. उसके पाप ने दूसरों के जीवन में क्या नकारात्मक प्रभाव डाला?

ग. आप कहां पर अब्राहम के प्रति परमेश्वर की दया को देखते हैं?

३. उत्पत्ति १३:१—४ क्या आप यहां किसी अनुकरण करने के लिए सबक को देखते हैं?

छठा दिन

अध्याय ७— " अब्राहम से परमेश्वर की वाचा"

मूल पाठ: अध्याय ११:२७—३२ और १२ मुख्य पद: अध्याय १२:२ " और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा और तुझे आशीष दूंगा और तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। " विषयगत वाक्य: परमेश्वर ने बिना शर्त अब्राहम से एक वाचा बांधी जिसमे भूमि,लोग और सारे देशों के लिए आशीष शामिल थी। जीवन सिद्धान्त: परमेश्वर पर विश्वास करने वालों और आज्ञा मानने वालों को परमेश्वर आशीष प्रदान करता है।

साराशं: अब्राहम परमेश्वर द्वारा चुना गया दास था जिसे विश्वास में जीने के लिए बुलाया गया। उसे अपनी सारी चीजों को छोड़कर एक अनजान देश में जाने के लिए कहा गया। अब्राहम ने विश्वास द्वारा अपना कदम निकाल कर पहचाना कि परमेश्वर के वचन सत्य हैं, उन पर भरोसा किया जा सकता है और वह अपनी प्रतीज्ञाओं को पूरा करने में विश्वास योग्य है। इस यात्रा के दौरान अब्राहम ने बहुत सी शिक्षाओं को प्राप्त किया जो आज भी हमारे जीवन के लिए उत्तम शिक्षाएं हैं। सबसे उत्तम शिक्षा सम्भवत: यह है कि कामों के बगैर विश्वास मृतक है। बाद में हम इस शिक्षा को याकूब की पुस्तक में भी पाते हैं।

एक विश्वास पूर्ण जीवन पूरी तरह से मसीह पर आधारित होता है। मिस्र में पूरी तरह असफल होने के बाद, अब्राहम ने सीखा कि परमेश्वर मनुष्य की सारी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं। दूसरा सबक है कि हम परमेश्वर के साथ संगति रखने ने क्रूर संसार को सहने के लिए तैयार हो जाते हैं। शत्रुओं द्वारा जीत लिये गये देश मिस्र में जाते समय अब्राहम के निर्णय के

साथ किसी तम्बू या वेदी का जिक्र नहीं किया गया था। वेदी परमेश्वर के साथ संगति होने का चिन्ह है। हमें इस संसार का सामना करने के लिए अपने जीवन में वेदी बनाना अर्थात परमेश्वर के साथ एकान्त समय बिताना सीखना चाहिए। यूहन्ना १६:३३ में यीशु ने कहा, " संसार में तुम्हे क्लेश होगा, परन्तु ढाँढ़स बाँधों मैंने संसार को जीत लिया है " जब हम अपने परमेश्वर से जुड़कर उसे अपने जीवन की अगुवाई करने देते हैं, हम भी अब्राहम के समान विश्वास के द्वारा परमेश्वर की प्रतीज्ञाओं को पूरा होता देख सकते हैं।

अब्राहम परमेश्वर का मित्र बन गया और बाद में विश्वास का पिता कहलाया (गलातियों ३) उसने सीखा कि परमेश्वर को आपने वायदों को पूरा करने के लिए हमारी सहायता की कोई आवश्वकता नहीं है। यदि हम हमारी अगुवाई करने वाले परमेश्वर को जानते हैं तो हमें किसी और का मुँह देखने की आवश्यकता नहीं है। जब हम विश्वास के साथ आज्ञापालन करने का पहला कदम उठाते हैं, परमेश्वर हमें दूसरा कदम उठाने की आशीष और अनुग्रह प्रदान करेगें। क्या हम विश्वास द्वारा उसका अनुकरण करने का चुनाव करेगें? क्या हम अब्राहम के समान अपनी पीढ़ी में अपनी बुलाहट के प्रति विश्वास योग्य होगें?

परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता ंस्वर्गीय प्रतिफल के लिए बड़े द्वारों को खोलती है।